DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO. 9415376545

B.A PART-II Paper-IV (Indian Government and Politics)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Lecture No. 07 Date. 10/08/2020

राजनीतिक संस्कृति के लक्षण
(Nature and Charracteristics of Political Culture)

राजनीतिक संस्कृति सामान्य संस्कृति का ही एक अंग है और एक व्यक्ति अथवा सम्पूर्ण समाज के राजनीतिक व्यवस्था के प्रति जो आग्रह होते हैं उन्हें ही सामूहिक रूप से राजनीतिक संस्कृति का नाम दिया जाता है। कुछ सीमा तक तो यह एक समाज की ऐतिहासिक विरासत होती है और कुछ सीमा तक राजनीतिक दलों, दबावसमूहों तथा अन्य अनेक राजनीतिक तथा गैर राजनीतिक तत्वों से प्रभावित होती है। राजनीतिक संस्कृति के ~~लक्षणों~~ कुछ प्रमुख लक्षणों का विवेचन निम्नवत है –

1. राजनीतिक संस्कृति एक अमूर्त नैतिक धारणा – राजनीतिक संस्कृति का मूल आधार व्यक्ति और समाज के राजनीतिक मूल्य एवं विश्वास होते हैं। ये मूल्य और विश्वास सामान्य नैतिक धारणाओं के अंग होते हैं और इन्हें अन्य भौतिक तत्व की भाँति कोई मूर्त स्वरूप प्राप्त नहीं होता है। इन्हें तो केवल ~~सम~~ समझा और अनुभव ही किया जा सकता है।

2 राजनीतिक संस्कृति अनेक तत्वों का सामूहिक और समन्वित रूप – राजनीतिक संस्कृति सामान्य संस्कृति का एक अंग है और सामान्य संस्कृति के ही समान अनेक तत्वों का सामूहिक और समन्वित रूप है। ऐतिहासिक विरासत, भौगोलिक परिस्थितियाँ, समाज की सामान्य संस्कृति, विचारधाराएँ, राजनीतिक व्यवस्था और इन सबके अतिरिक्त सामाजिक-आर्थिक संरचना आदि के द्वारा राजनीतिक संस्कृति के आधार के रूप में कार्य किया जाता है।

PTO

Scanned with CamScanner

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo- 9415376545

Ref. No..... Date.....

3. राजनीतिक संस्कृति में गतिशीलता — अन्य राजनीतिक संस्कृति अगर एक ओर राजनीतिक विरासत और भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित होती है तो दूसरी ओर सामाजिक-आर्थिक संरचना के द्वारा इसका नियमन किया जाता है। सामाजिक-आर्थिक संरचना और राजनीतिक संस्कृति के अन्य उपतत्व स्थिर नहीं वरन निरन्तर विकासशील होते हैं। इस दृष्टि से सभी राजनीतिक संस्कृतियाँ आवश्यक रूप से गतिशील होती हैं इसमें से कुछ मन्द परिवर्तनशीलता और कुछ तीव्र परिवर्तनशीलता की स्थिति को अपनाती हैं।

विकासशील राज्यों के उदय से राजनीति विज्ञान के अध्ययन के दृष्टिकोण में परिवर्तन आने लगा। अब राजनीतिक व्यवस्थाओं को संविधानों, संरचनाओं और संस्थाओं के आधार पर समझना अधिक हेय गया क्योंकि वैधानिक व्यवस्था और व्यवहार में अन्तर आने लगे थे। पाश्चात्य की स्थिर राजनीतिक व्यवस्थाओं से भिन्न नवोदित राज्यों में राजनीतिक ~~क्रिया~~ व्यवहार और संस्थागत व्यवस्थाओं में सर्वाधिक अन्तर देखने में आने लगे। इसलिए इन अन्तरों को समझने के लिए राजनीतिक व्यवहार की वास्तविक शक्ति संचालन की खोज होने लगी। इससे यह स्पष्ट हो गया कि राजनीतिक संस्थानों, प्रक्रियाओं एवं प्रकार्यों को उन अभिवृत्तियों के संदर्भ में ही समझा जा सकता है जो इनको संचालित करने वाले मानव समुदाय में पायी जाती हैं।

Scanned with CamScanner